॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो
देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

युवा क्रान्ति वर्ष 2016
विचार क्रान्ति अभियान

युवा जागरण का तेजस्वी अभियान

अखिल विश्व गायत्री परिवार

युवा प्रकोष्ठ

शान्तिकुंज हरिद्वार

स्वागतम्

बाल संस्कार शाला संचालन प्रशिक्षण

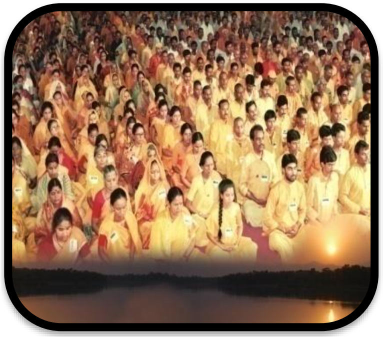

साधना

शिक्षा

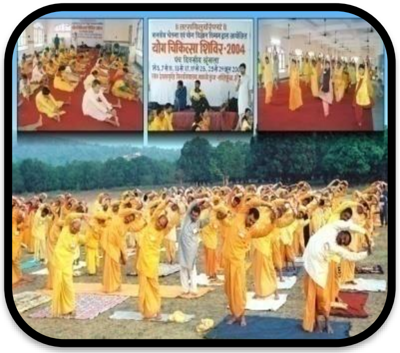

स्वास्थ्य

पर्यावरण

सप्त आंदोलन

कुरीति ,व्यसन मुक्ति

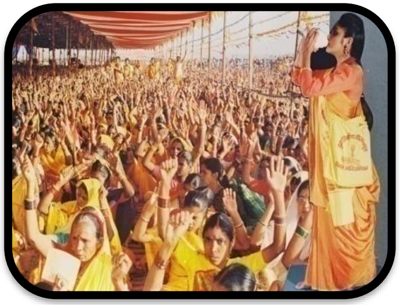

नारी जागरण

स्वावलंबन

साधना
पर्यावरण
शिक्षा
स्वावलंबन
स्वास्थ्य
नारी जागरण
कुरीति एवं व्यसन मुक्ति

परमात्मा का
उपहार –
हमारा सुंदर संसार

सुंदर प्रकृति, नदी, झरने

संतुलित पर्यावरण, खेत

सुंदर पक्षी

जंगली पशु

विभीषिकाओं से जूझता वर्तमान

आतंकवाद, आंदोलन

टूटते परिवार

भ्रष्टाचार, महंगाई

सूखा, बाढ़, सुनामी

जनसंख्या, बेरोजगारी

व्यसन

कुरीतियां

आस्था संकट

नंगे पहाड़, सूखी नदियाँ, जहरीली कृषि

युवा लक्ष्यविहीनता

आखिर किसने किया ये बिगाड़ ? इन विभीषिकाओं का जनक कौन ?

प्रकृति ?

पेड़ पौधे

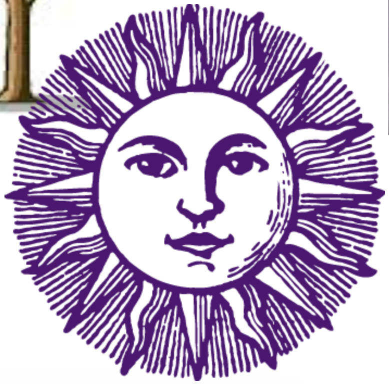

सूर्य ??

अंतरिक्ष के प्राणी

या

भगवान ???

जंगली जानवर ?

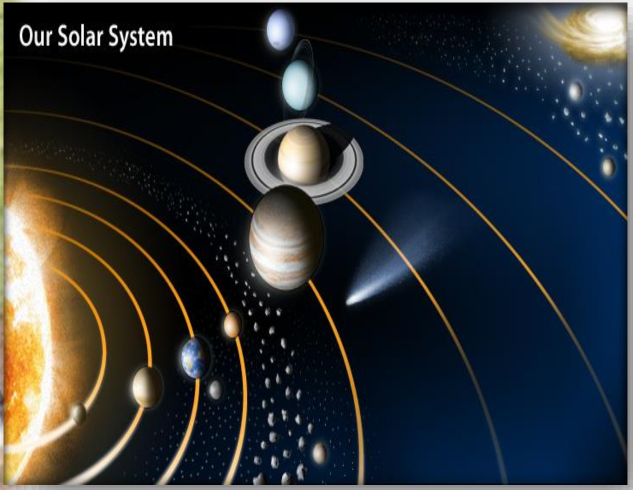

ग्रह नक्षत्र ??

आखिर कौन है समस्या के मूल में ?????

मानवी

अस्वच्छ

दुर्बुद्धि

मन

मा न व

जहां समस्या है वहीं समाधान खोजना होगा..........

चाहिये एक सच्चा और अच्छा इन्सान !!

सच्चे और अच्छे इन्सान के निर्माण की उचित अवस्था कौन सी है....

→ वृद्धावस्था ?

→ प्रौढ़ावस्था ??

→ युवावस्था ???

→ बाल्यावस्था ????

सच्चे और अच्छे **बच्चे**..

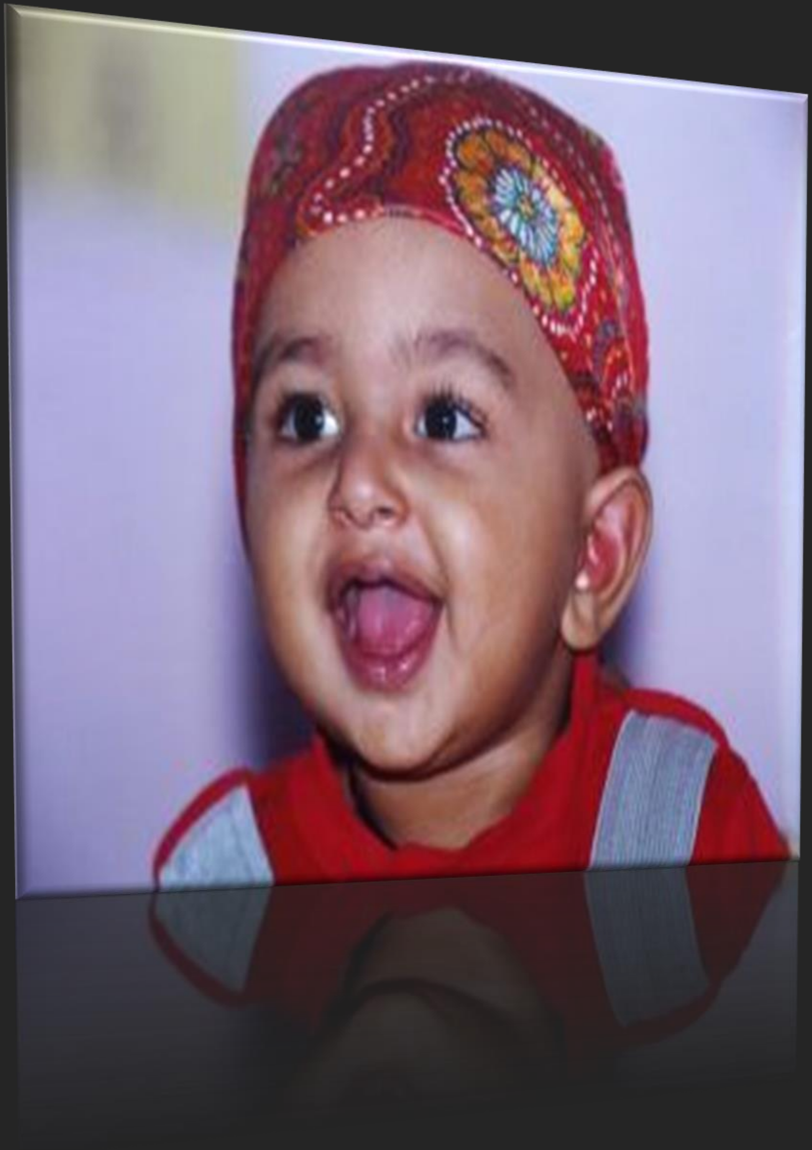

बालक क्या है ?

भगवान का रूप

ईश्वरीय विभूतियों से परिपूर्ण

परिवार , समाज व राष्ट्र
का उज्ज्वल भविष्य

गीली मिट्टी

बचपन पचपन का
पिता

बीज, नन्ही पौध,
कलम के समान

वातावरण से
प्रभावित

गढ़ने की प्रक्रिया – प्राचीन ऋषि प्रणीत भारतीय जीवन

- संस्कार परम्परा
- गुरुकुल शिक्षण प्रक्रिया
- उत्कृष्ट पारिवारिक वातावरण
- प्रगतिशील सामाजिक व्यवस्था

हमारी प्राचीन संस्कार परम्परा

गर्भ में संस्कार

5 वर्ष तक 75% व्यक्तित्व विकसित

अभिमन्यु

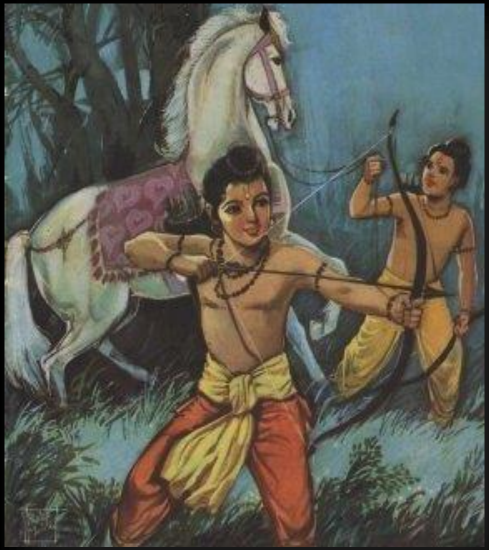

लव – कुश

अष्टावक्र

सोलह संस्कार बालक के लिये प्रमुख

पुंसवन

नामकरण

दीक्षा

अन्नप्राशन

विद्यारंभ

बालकों का शिक्षण – गुरुकुल परम्परा

परिवार पाठशाला , माता – पिता गुरु व प्रकृति विषय

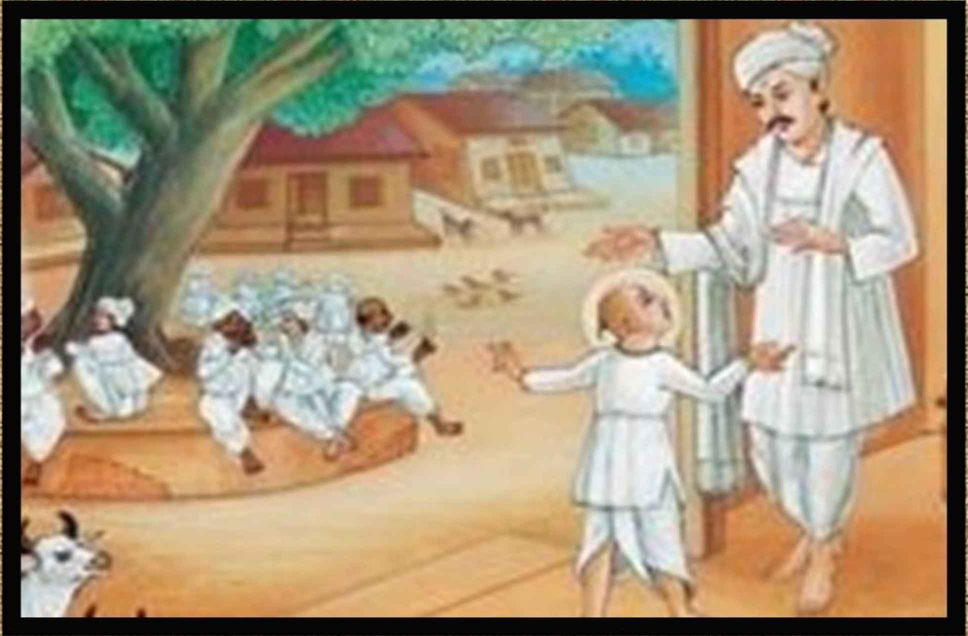

उत्कृष्ट पारिवारिक, सांस्कृतिक वातावरण – बच्चों में दिव्य संस्कारों का रोपण

महामानवों का प्रेरणाशील बचपन

आस्तिकता की अग्नि – जीवात्मा का संस्कार

महान आत्माएं
पवित्र गर्भ

भुवनेश्वरी देवी

जीजा बाई

पुतली बाई

दानकुँवरी देवी

वर्तमान संकट ?

* * बच्चे का जन्म एक एक्सिडेंट
* * प्रथम गुरु माता पिता जिम्मेदारी से अनभिज्ञ
* * बच्चों का निर्माण कैसे – माता पिता को ज्ञान नहीं
* * केवल भौतिक साधन सुविधाएं जुटाना – कर्तव्यों की इतिश्री
* * पारिवारिक उत्कृष्ट वातावरण, आदर्श का अभाव
* * पारिवारिक विघटन

देश गुलाम क्यों बनता है?

मैं भारत में काफी घूमा हूं। दाएं-बाएं, इधर-उधर मैंने यह देश छान मारा। और यहां मुझे एक भी भिखारी, एक भी चोर देखने को नहीं मिला।

यह देश इतना समृद्ध है और इसके नैतिक मूल्य इतने इतने उच्च हैं और यहां के लोग इतनी सक्षमता और योग्यता लिए हुए है कि हम यह देश कभी जीत सकते हैं यह मुझे नहीं लगा।

इस देश की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपरा इस देश की रीढ़ है। और हमें यदि यह देश जीतना है तो इसे तोड़ना ही पड़ेगा। उसके लिए इस देश की प्राचीन शिक्षण पद्धति और संस्कृति बदलनी ही पड़ेगी।

भारतीय लोग यदि यह मानने लगे कि विदेशी (विशेषत: अंग्रेजी) जो है श्रेष्ठ है, अपनी स्वयं की संस्कृति से भी ऊंची है तो वे अपना आत्म सम्मान गंवा बैठेंगे।

और फिर वे वहीं बनेंगे जो हम चाहते हैं - **एक गुलाम देश।**

(२ फरवरी १८३५ को ब्रिट्रेन की पार्लियामेंट में दिये गए लॉर्ड मैकॉले के भाषण के कुछ अंश)

बस्ते
का
बोझ

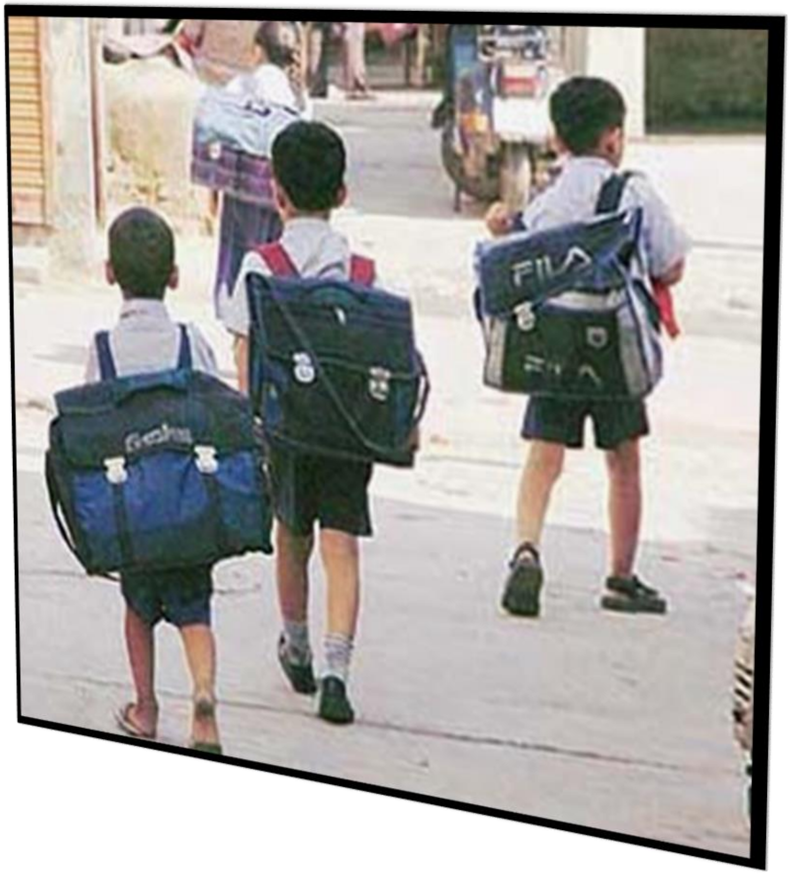

मैकाले की पेटभराऊ,
स्वार्थ व शार्टकट सफलता की शिक्षा

अनियमित, असंयमित दिनचर्या श्रमशीलता , साहस का अभाव, स्कूली शिक्षा में विद्या का लोप

फास्ट फूड,

जंक फूड

वीडियो गेम्स,टी वी,
कॉमिक्स,
विषैला संगीत

समाधान

बाल संस्कार शाला

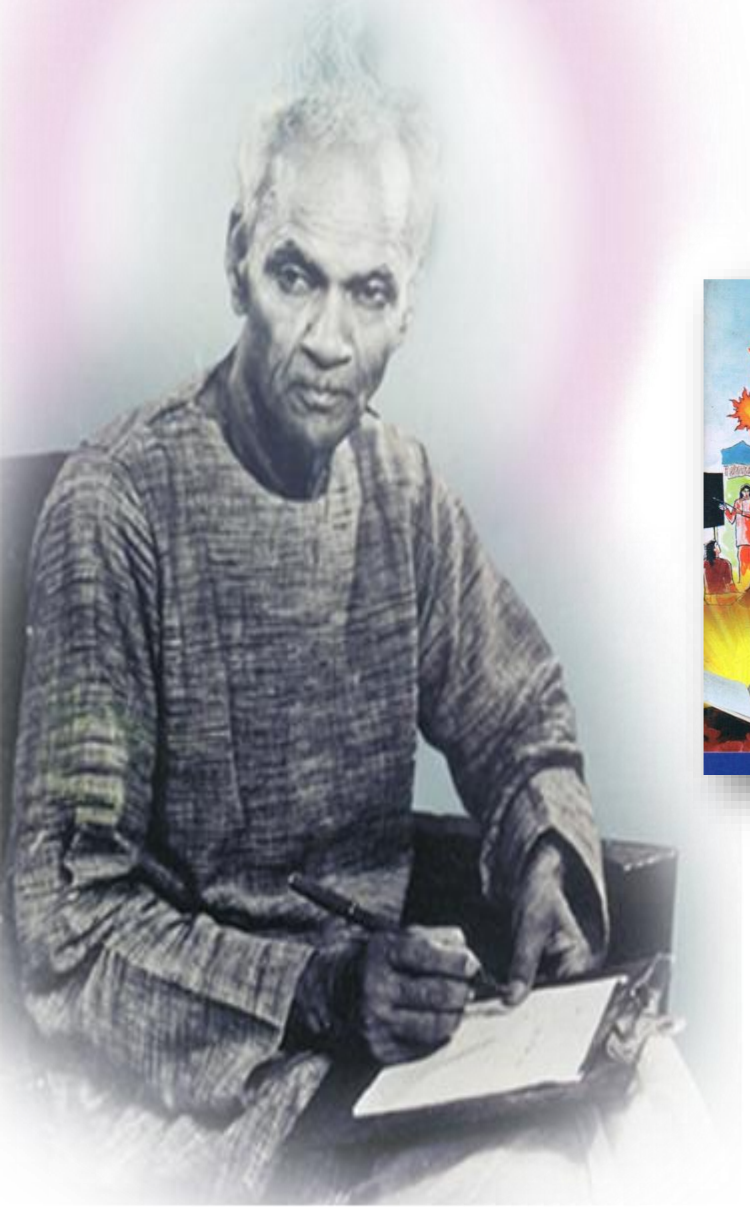

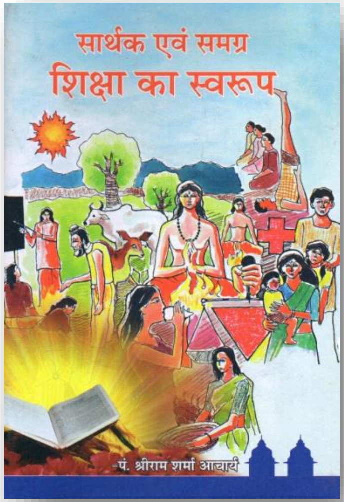

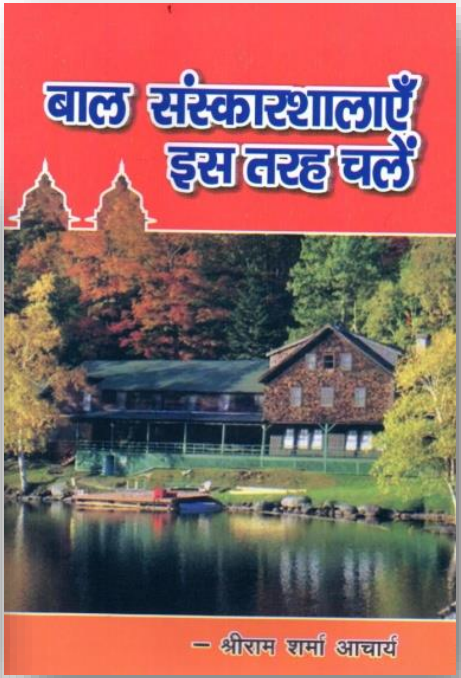

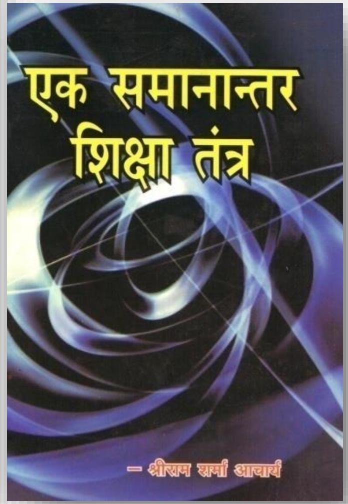

"बाल संस्कार शालायें इस तरह चलें"

– पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

1. नौनिहालों को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, विकास, की ओर अग्रसित करना
2. मानवीय मूल्यों, ऋषि परम्पराओं और सांस्कृतिक विरासत से परिचित कराना

- समस्त क्रांति का आधार बाल संस्कार
- युग निर्माण का अभिनव संस्करण
- संस्कारवान पीढ़ी को गढ़नें का आत्म गौरव
- बच्चों के माध्यम से परिवर्तन आसान
- राष्ट्र सेवा का अनुपम उद्देश्य

पीढ़ियों के अन्तर (Generation Gap) कम करना

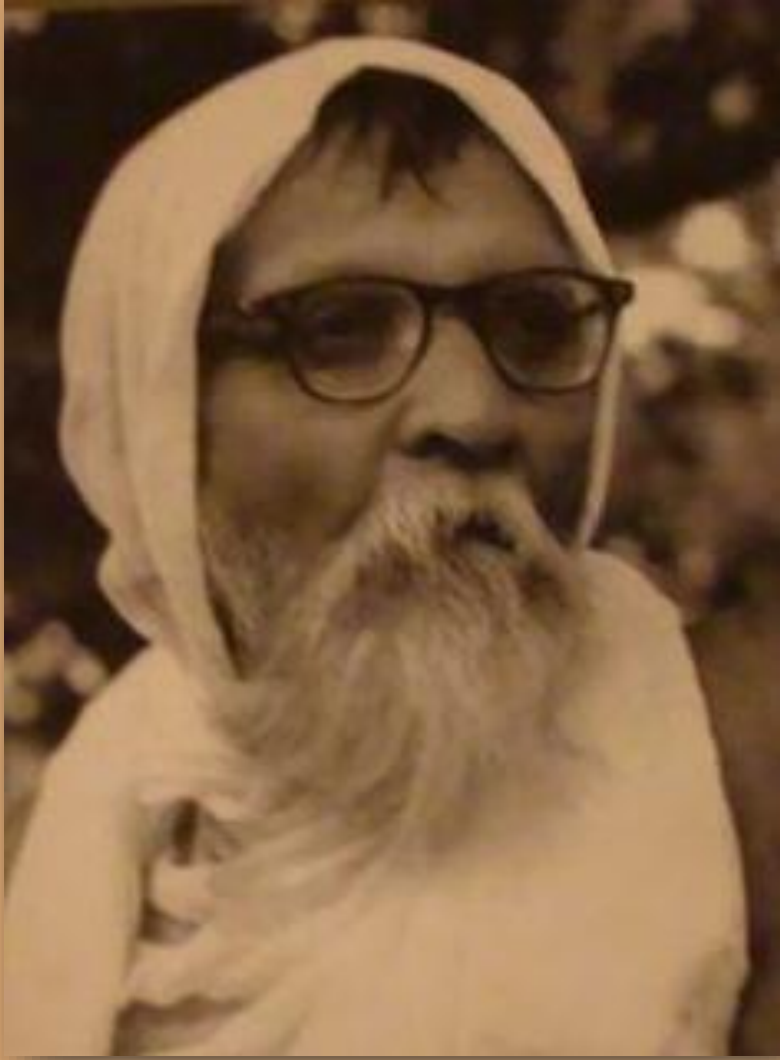

“युवा क्या करें ?
– बच्चों और बुजुर्गों को जोड़ें”

: आचार्य विनोबा भावे

हमारा मूल मंत्र

"Every soul is potentially divine and manifestation of divinity is aim of the bal sanskar shala education.

उद्देश्य

बा – बालकों में दिव्य गुणों का विकास
ल – लक्ष्य भेदी बनाना
सं – संस्कृति का ज्ञान कराकर उसका रक्षक बनाना
स – स्वाध्यायी, स्वावलम्बी, स्वयं सेवी बनाना
का – कार्यकौशल बढाना
र – रचनात्मक शैली द्वारा मानवीय गुणों को उभारना
शा – शानदार व्यक्तित्व गढ़ना
ला – लाख मनकों में चमकदार हीरा बनाना

आचार्य

विद्यार्थी के अन्तर्निहित ज्ञान के प्रकटीकरण में उद्दीपक तथा इस मार्ग में आने वाली बाधाओं को दूर करने वाला व्यक्तित्व

विद्या

हर मानव वस्तुतः देवता है। विद्या का उद्देश्य मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता एवं दिव्यता की अभिव्यक्ति ही विद्या अध्ययन का उद्देश्य है।

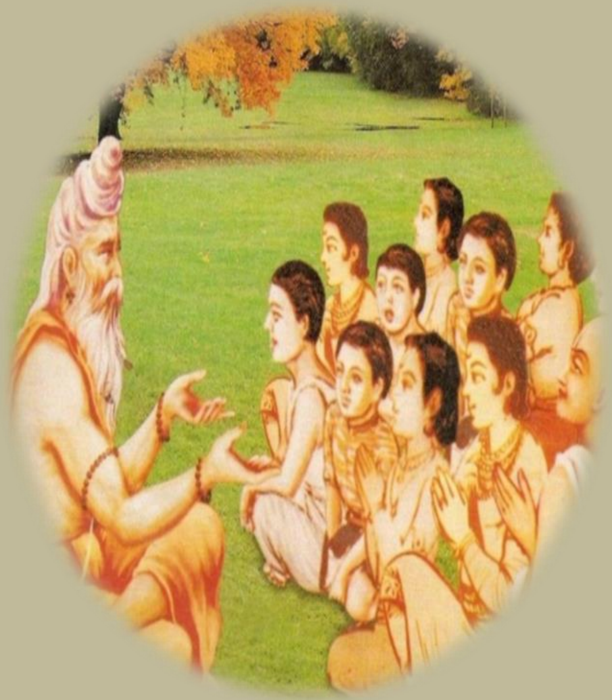

याद रखें

- कहने से अच्छा करना
- आचार्य वह जो आचरण से शिक्षा दें

संचालन हेतु आवश्यक उपकरण

सूक्ष्म

भाव संवेदना, प्रेम, करुणा तथा सहकार से परिपूर्ण हृदय

- नौनिहालों में संस्कारों के बीजारोपण हेतु नित नूतन करने की चाह
- राष्ट देवता के चरणों में संस्कारवान नयी पीढ़ी को अर्पित करने की समर्पित भावना

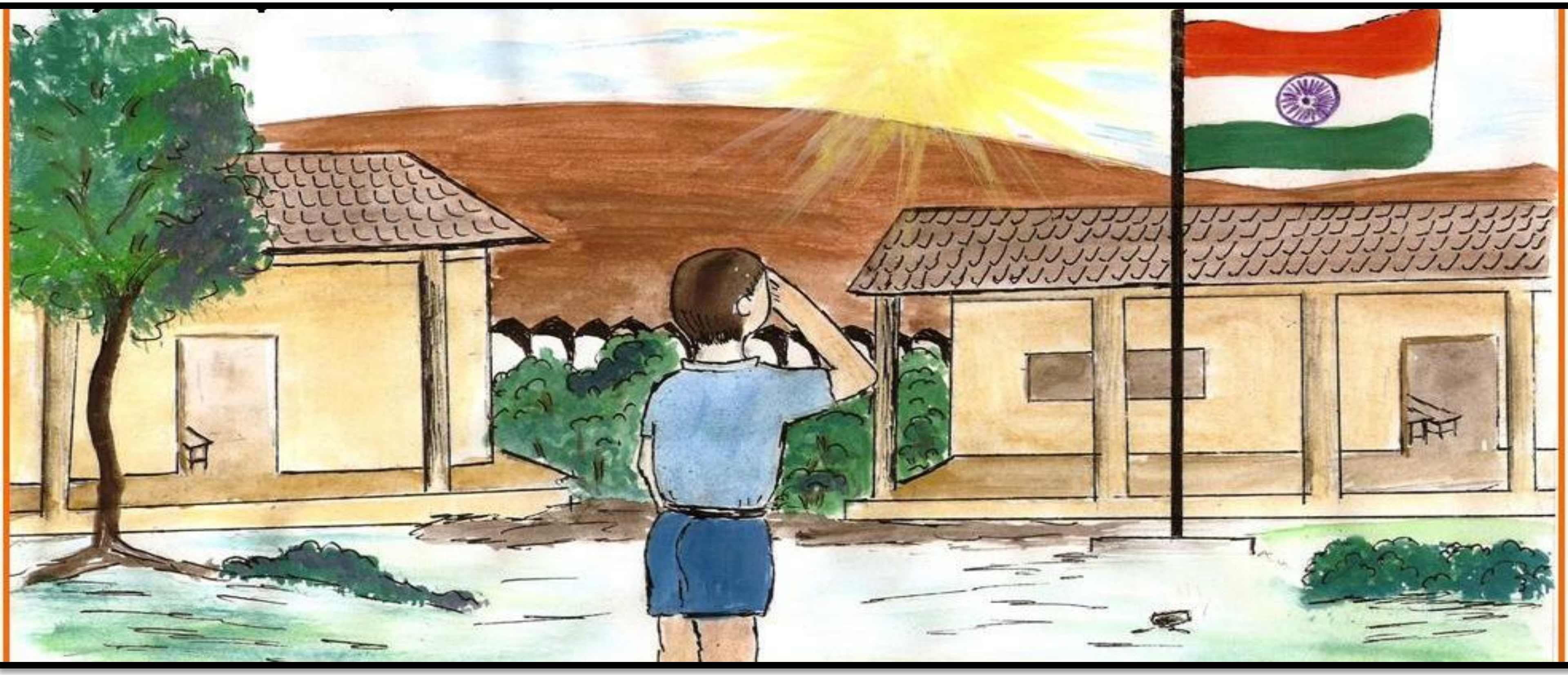

स्थूल

- शांत स्वच्छ हवादार कमरा/हॉल
- बिछावन हेतु दरी/टाट पट्टी
- पीने का पानी एवं शौचलय की व्यवस्था
- फ्लैक्स बोर्ड, चार्ट, श्यामपट, चॉक, डस्टर, आदि
- 5 – 25 हम उम्र बच्चे (9 – 13 वर्ष)
- बाल संस्कार शाला मार्गदर्शिका एवं सहायक साहित्य

सूक्ष्म + स्थूल = संपूर्ण

बच्चे कहाँ से ? कैसे ?

- मोहल्ले में माता पिता से संपर्क कर
- घर के नजदीक के विद्यालयों से प्राचार्य/प्रधानाचार्य से निवेदन कर

निवेदन हेतु पालक को पत्र जो

- संस्कार शाला के उद्देश्यों को स्पष्ट करें
- संस्कार शाला का पता दर्शाए
- बालक का पूर्ण विवरण
- पालक की सहमति
- पालक को पहली बार बच्चों के साथ आने का निवेदन

कैसे करे कक्षा की तैयारी ?

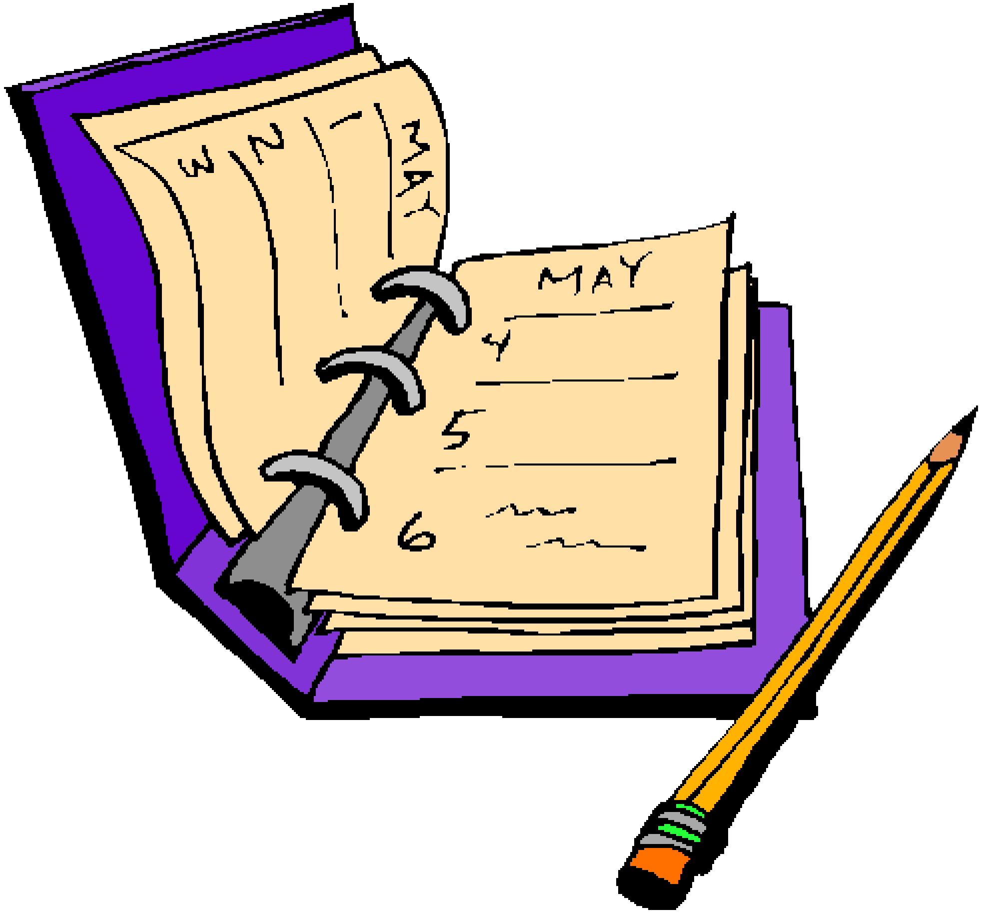

मार्गदर्शिका का 4 – 6 बार पूर्ण रूपेन अध्ययन करें

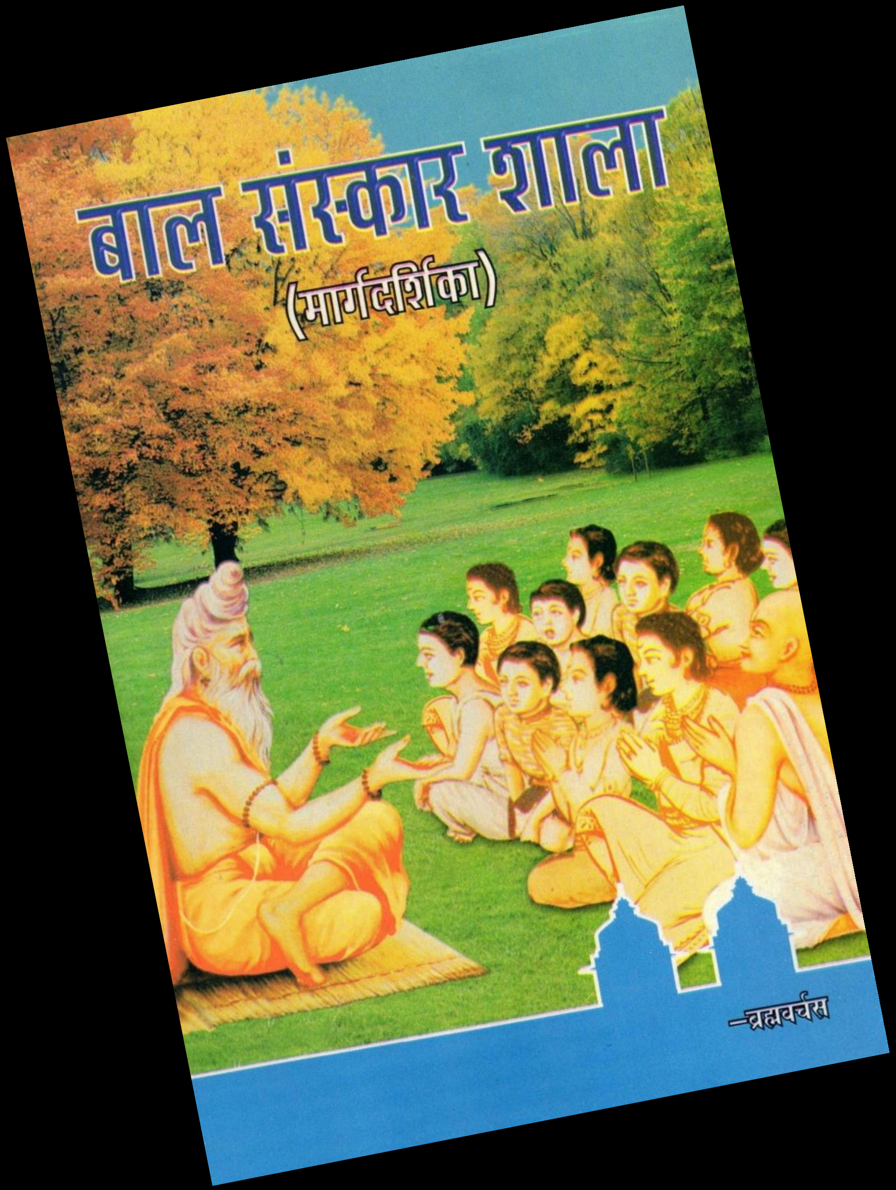

कक्षा क्रम

1. प्रार्थना (सर्वधर्म प्रार्थना)	05 मिनट
2. बाल प्रबोधन –	
अ. प्रेरणाप्रद कहानियाँ	10 मिनट
ब. प्रेरक प्रसंग	10 मिनट
स. सुविचार/सद्वाक्य	03 मिनट
3. प्रज्ञा गीत	10 मिनट
4. जीवन विद्या	20 मिनट
5. जप/ध्यान	05 मिनट
6. शुभकामना, शान्तिपाठ	02 मिनट
7. सत्संकल्प/जयघोष	05 मिनट
8. खेल आदि की पूर्व तैयारी	05 मिनट
9. खेल, योग, जन्मदिन, जयंती, पर्व आयोजन	45 मिनट

संक्षेप में कक्षा क्रम

• कक्षा अवधि	01 घंटा 15 मिनट
• कक्षा उपरान्त बाल योग, खेलकूद या प्रतियोगिता	45 मिनट
कुल अवधि	02 घंटा

बाल संस्कार शाला
युवा प्रकोष्ठ- गायत्री परिवार, नीमच
"हम बदलेंगे - युग बदलेगा"
"मनुष्य में देवत्व का उदय और
धरती पर स्वर्ग का अवतरण।

संस्कार के विषय –

- ईश वंदना
- बाल प्रबोधन
- जीवन विद्या
- खेल, योग, जयंती पर्व जन्मदिन आयोजन

बालसंस्कार शला का प्राण – “जीवन विद्या”

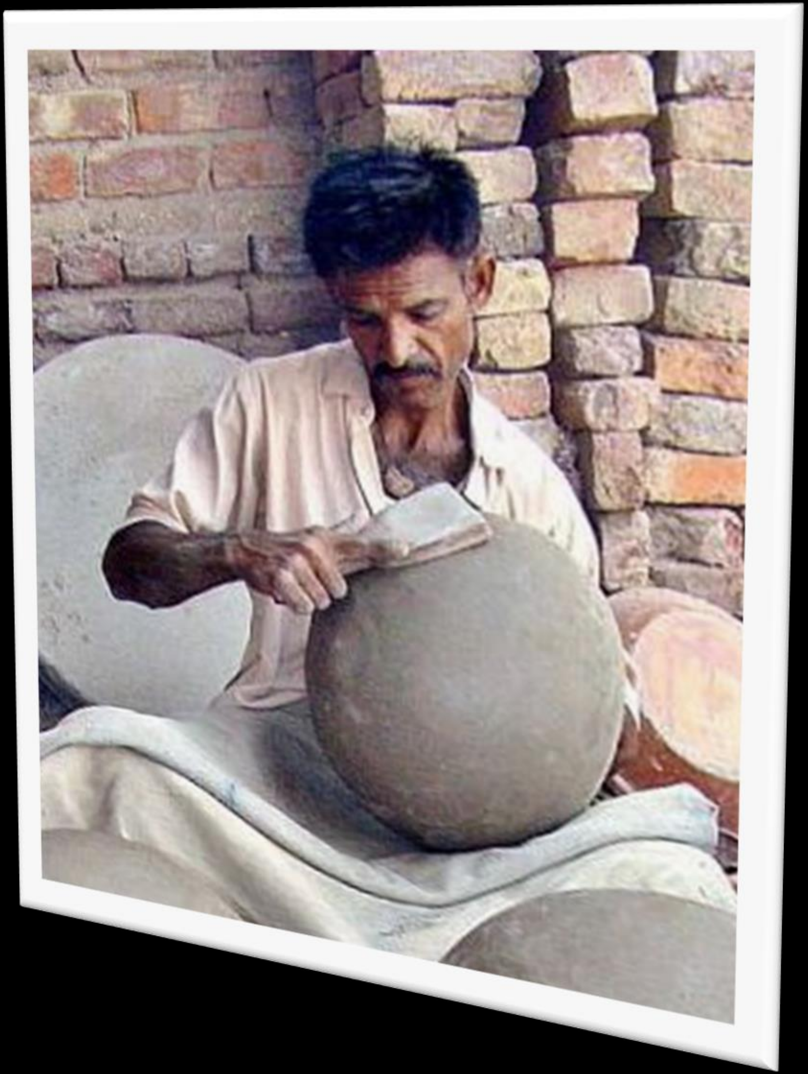

सुव्यवस्थित दिनचर्या ''जीवन विद्या''

क्र.		1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15
1	प्रातः काल सूर्योदय के पूर्व उठा															
2	जागरण प्रार्थना की/ दिन भर के कार्यो का संकल्प किया															
3	धरती माता/माता–पिता/बडों को प्रणाम															
4	ऊषापान किया															
5	योग, प्राणायाम, ध्यान मौन रहकर किया															
6	दंत मंजन/दातून और स्नान किया															
7	नियमित उपासना के साथ सतसंकल्प पाठ किया															
9	विद्यालय में गुरूजनों को प्रणाम किया															
10	मन लगाकर पढ़ाई की, विद्यालय गतिविधियों में भाग लिया															
11	किसी की मदद की बड़ों के काम में सहयोग किया															
12	अपना कार्य स्वयं किये (पूरे/कुछ)															
13	सुव्यवस्था का ध्यान रखा															
14	प्रार्थना के साथ समय पर भोजन किया															
15	जूठन नहीं छोड़ी															
16	टी.वी. में कम खेल कूद से ज्यादा मनोरंजन किया															
17	पैसे की बचत की															
18	निंदा, चुगली, लड़ाई झगड़ा नहीं किया															
19	सायं कालीन प्रार्थना/आरती की															
20	पाठयक्रम दोहराया गृहकार्य पूर्ण किया															
21	व्यक्तित्व विकास हेतु स्वाध्याय किया															
22	दिन भर के कार्यो का मूल्यांकन किया															
	नोट – समय पर भोजन और शयन व्यक्ति को दीर्घायु का सफल बनाते हैं।															

बच्चों का मूल्यांकन

Excellent
Very good
Good
Average
Poor

VERY SATISFIED
3
4
5
6
7
8
9

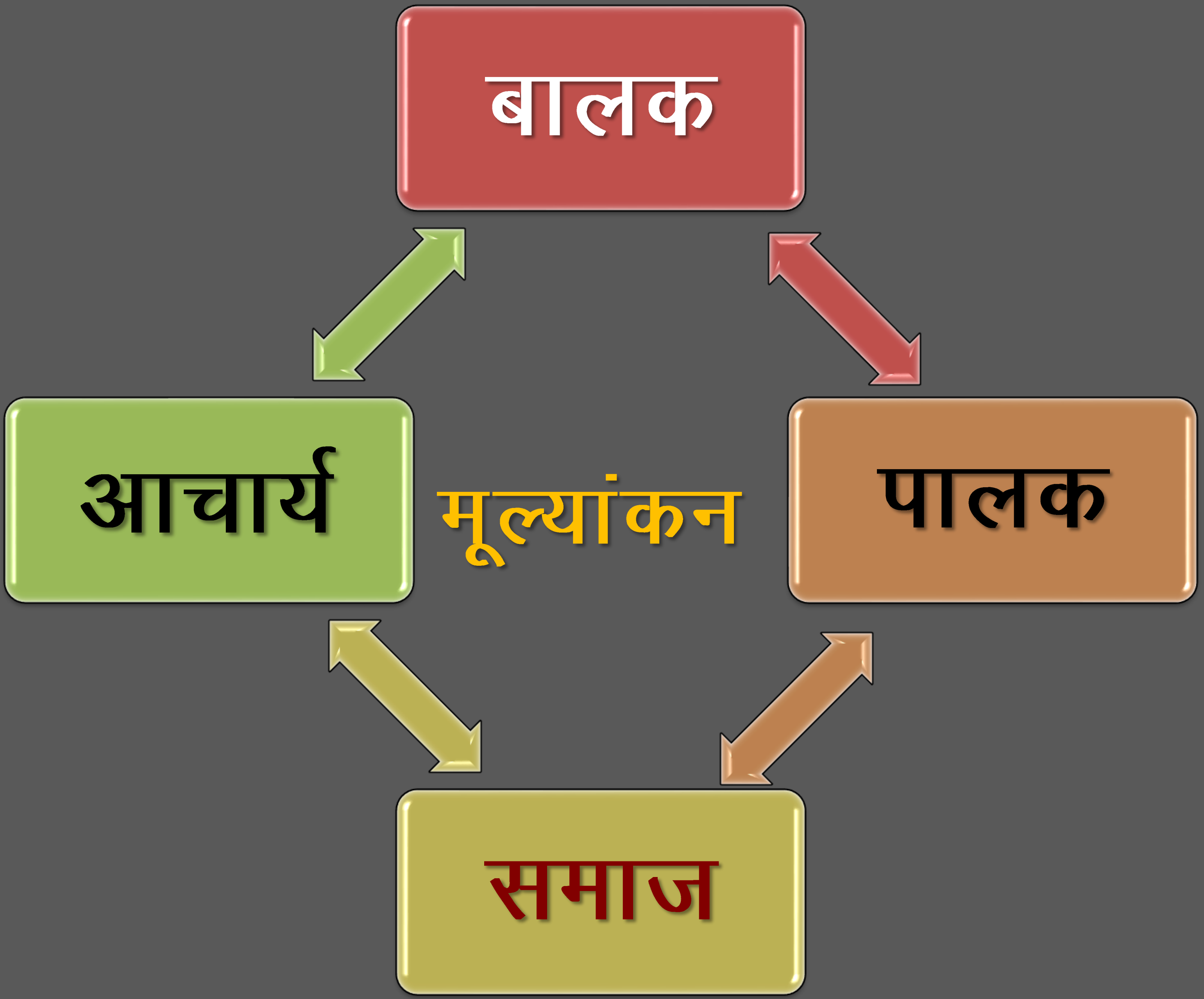
बालक
आचार्य
मूल्यांकन
पालक
समाज

- माह में एक बार पालकों से सम्पर्क – राय जाने, अपेक्षा पूछें, बच्चों को प्रेरित व प्रोत्साहित करने, पारिवारिक वातावरण अनुकूल बनाने हेतु निवेदन करें
- बच्चों के सामने उनकी कमियों का उल्लेख कदापि न करें
- मूल्यांकन 6 माह में एक बार, इसे पंजियन रजिस्टर में दर्ज करें
- कोई ग्रेडिंग अथवा अंक नहीं
- सत्रांत में प्रमाण पत्र वितरित करें जिसमें उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करें

बच्चों का मूल्यांकन वस्तुतः आचार्य का मूल्यांकन है । बच्चों में अपेक्षित परिवर्तन न दिखाई देने पर आचार्य अपनी कार्यशैली का पुनरावलोकन करें।

संदर्भ ग्रंथ

- बाल संस्कार शाला मार्गदर्शिका
- प्रेरणाप्रद दृष्टांत (वाङ. क्र. 67)
- हमारी भावी पीढी एवं उसका नवनिर्माण (वाङ. क्र. 63)
- शिक्षा एवं विद्या (वाङ. क्र. 49)
- बाल निर्माण की कहानियां (16 भाग)
- हितोपदेश की कहानियां
- उपनिषद की कथायें
- पंचतंत्र की कथायें
- बोध कथायें
- समाचार पत्रों के प्रेरक तथ्य /कारुणिक घटनायें

बाल संस्कार शाला पर प0पू0 गुरुदेव का कथन

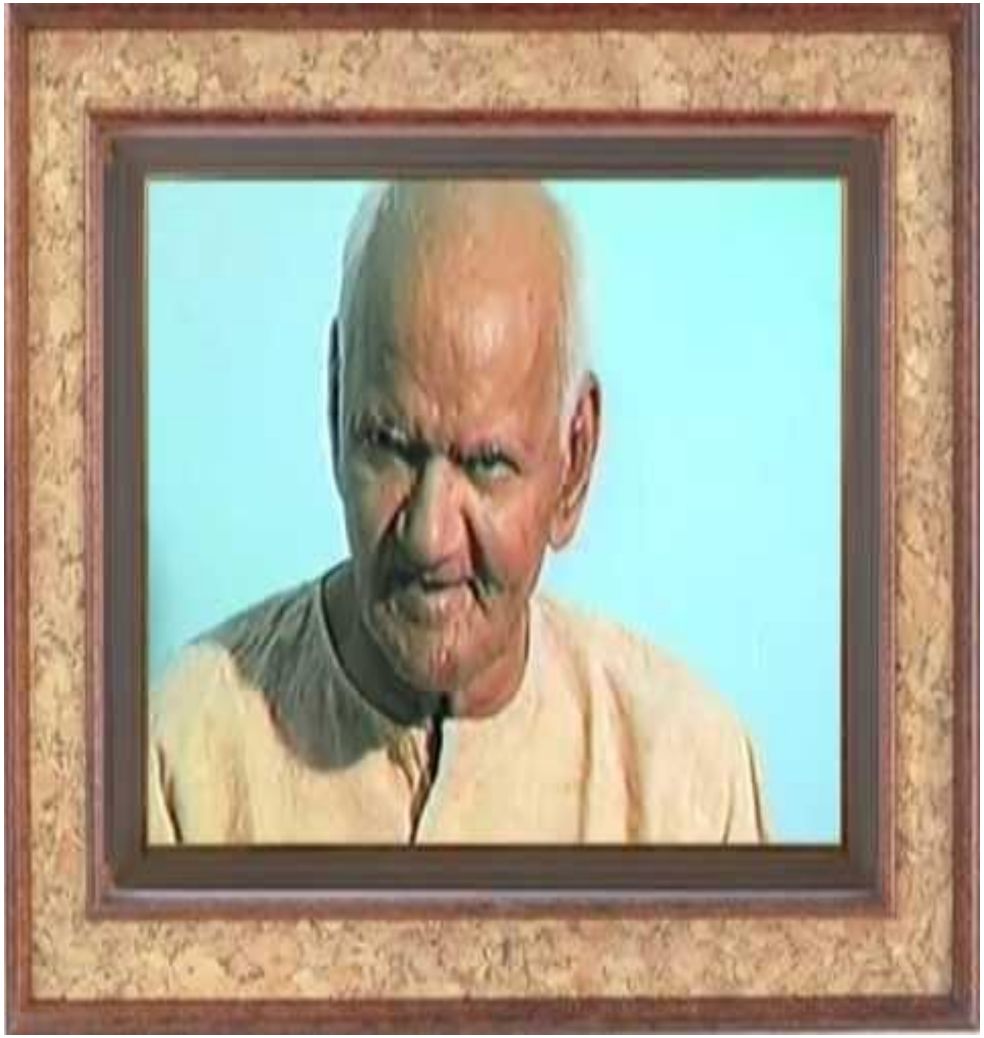

तुम्हें कुछ नहीं करना है। मैं तुम्हारे पास नई पीढ़ी के बच्चे लाऊँगा, तुम उनके पास बैठना, उनसे अच्छी अच्छी बातें करना, उन्हें साधनायें कराना। बाकी पीछे मैं सब कर दूँगा। स्थूल क्रियाकलापों को उत्कृष्ट बनाने की जिम्मेदारी तुम्हारी और सूक्ष्म में परिवर्तन प्रत्यावर्तन करने की हमारी।

सूक्ष्म सत्ता का दिव्य प्रवाह

आइये हम अपने
बचपन को
दुबारा लेकर आयें

आओ करें संकल्प

कम से कम एक
बाल संस्कार शाला
अवश्य चलायें औरों को
प्रेरित करें।

शुभारंभ / उद्घाटन

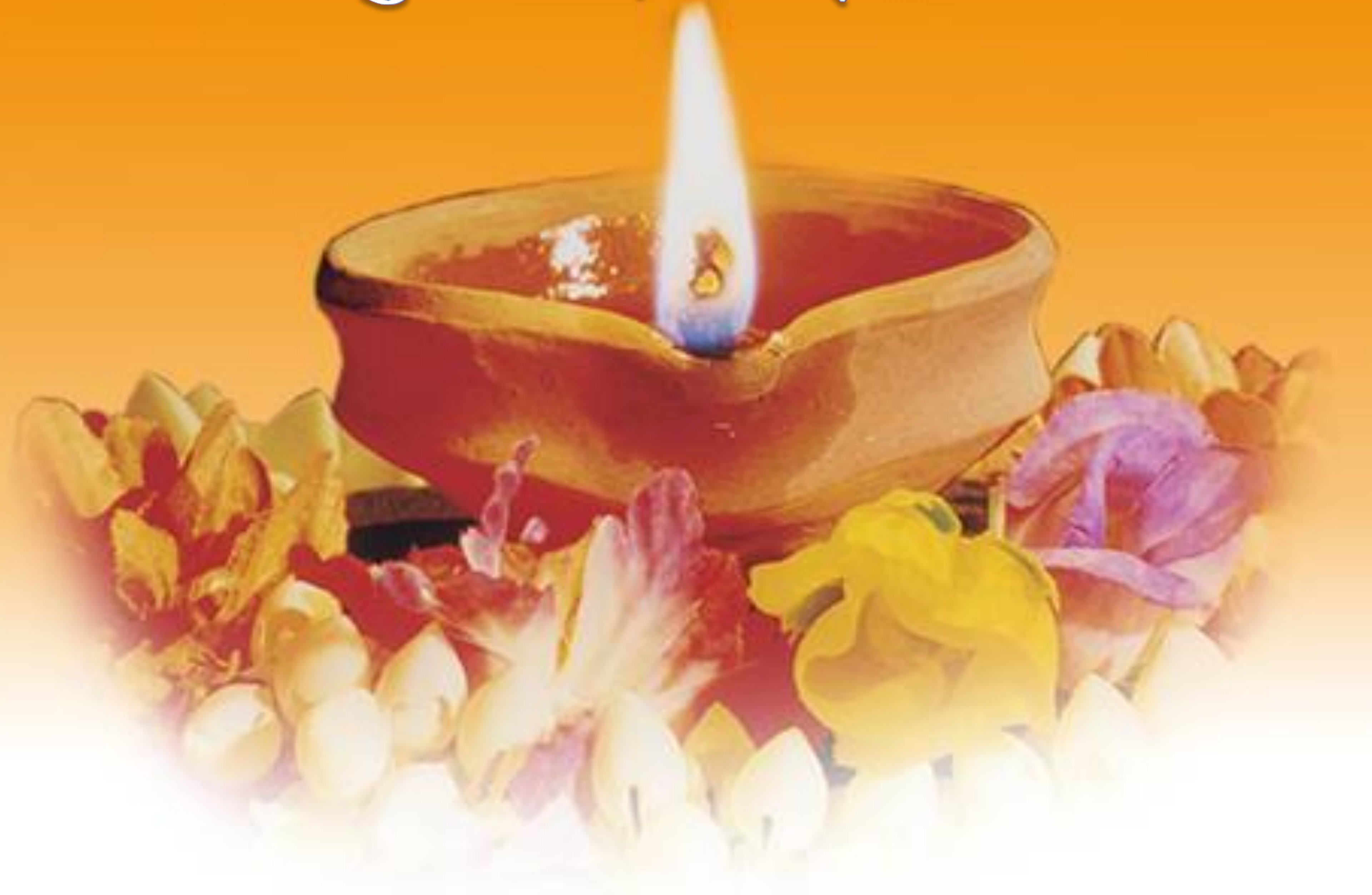

- निश्चित तिथि एवं समय तय करें
- परिजनों , पालकों एवं बालकों को आमंत्रित करें
- दीप प्रज्वलन, देव पूजन की सामान्य व्यवस्था बनाऐं
- देव पूजन हेतु किसी सम्माननीय समाजसेवी अथवा किसी बुजुर्ग को आमंत्रित करें
- पूजन के साथ आचार्य अपने संकल्प को दोहराऐं व प्रार्थना करें
- सबके प्रति सहयोग करने की अपील एवं आभार व्यक्त करें

एक प्रयास
धन्यवाद !